16 लोकोक्तियाँ/कहावतें
(Proverbs)

'लोकोक्ति' का अर्थ है 'लोक में प्रचलित उक्ति'। जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धृत किया जाता है तो लोकोक्ति कहलाता है। इसी को 'कहावत' कहते हैं। उदाहरण :

'उस दिन बात-ही बात में राम ने कहा, हाँ, मैं अकेला ही कुँआ खोद लूँगा। इस पर सबों ने हँसकर कहा, व्यर्थ बकबक करते हो, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता'। यहाँ 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' लोकोक्ति का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है 'एक व्यक्ति के करने से कोई कठिन काम पूरा नहीं होता'।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर

दोनों में अंतर इस प्रकार हैं—

(i) मुहावरा वाक्यांश होता है, जबकि लोकोक्ति एक पूरा वाक्य। दूसरे शब्दों में, मुहावरों में उद्देश्य और विधेय नहीं होता, जबकि लोकोक्ति में उद्देश्य और विधेय होता है।

(ii) मुहावरा वाक्य का अंश होता है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव नहीं है; उनका प्रयोग वाक्यों के अंतर्गत ही संभव है। लोकोक्ति एक पूरे वाक्य के रूप में होती है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव है।

(iii) मुहावरे शब्दों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं जबकि लोकोक्तियाँ वाक्यों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं।

लोकोक्तियाँ/कहावतें एवं उनके अर्थ

- अशर्फी की लूट और कोयले पर छाप—
  मूल्यवान वस्तुओं को नष्ट करना और तुच्छ को सँजोना
- अधजल गगरी छलकत जाय—
  थोड़ी विद्या, धन या बल होने पर इतराना
- अंधों के आगे रोना, अपना दीदा खोना—
  निर्दयी या मूर्ख के आगे दुःखड़ा रोना बेकार होता है
- अपनी करनी पार उतरनी— *किये का फल भोगना*
- अपना ढेंढर न देखे और दूसरे की फूली निहारे—
  अपना दोष न देखकर दूसरों का दोष देखना
- अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग—
  परस्पर संगठन या मेल न रखना
- आप डूबे जग डूबा—
  जो स्वयं बुरा होता है, दूसरों को भी बुरा समझता है
- आग लगन्ते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ—
  नष्ट होती हुई वस्तुओं में से जो निकल आये वह लाभ ही है
- आग लगाकर जमालो दूर खड़ी—
  झगड़ा लगाकर अलग हो जाना
- आगे नाथ न पीछे पगहा—
  अपना कोई न होना, घर का अकेला होना
- आगे कुआँ, पीछे खाई— *हर तरफ हानि की आशंका*
- आँख का अंधा नाम नयनसुख— *गुण के विरुद्ध नाम*
- आधा तीतर आधा बटेर— *बेमेल स्थिति*
- आप भला तो जग भला— *स्वयं अच्छे तो संसार अच्छा*
- आम का आम गुठली का दाम—*सब तरह से लाभ-ही-लाभ*
- आये थे हरि-भजन को ओटन लगे कपास—
  करने को तो कुछ आये और करने लगे कुछ और
- इतनी-सी जान, गज भर की जबान—
  छोटा होना पर बढ़-बढ़कर बोलना
- ईंट का जवाब पत्थर— *दुष्ट के साथ दुष्टता करना*
- इस हाथ दे, उस हाथ ले— *कर्मों का फल शीघ्र पाना*
- ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया—*कहीं सुख, कहीं दुःख*
- उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे—
  अपराधी ही पकड़नेवाले को डाँट बताये
- उद्योगिनं पुरुषसिंहनुपैति लक्ष्मी—
  उद्योगी को ही धन मिलता है
- ऊपर-ऊपर बाबाजी, भीतर दगाबाजी—
  बाहर से अच्छा, भीतर से बुरा
- ऊँची दूकान फीका पकवान—*बाहर ढकोसला भीतर कुछ नहीं*
- ऊँचे चढ़ के देखा, तो घर- घर एकै लेखा—सभी एक समान
- ऊँट किस करवट बैठता है— *किसकी जीत होती है*
- ऊँट के मुँह में जीरा— *जरूरत से बहुत कम*
- ऊँट बहे और गदहा पूछे कितना पानी—
  जहाँ बड़ों का ठिकाना नहीं, वहाँ छोटों का क्या कहना
- ऊधो का लेना न माधो का देना— *लटपट से अलग रहना*
- एक पंथ दो काज— *एक नहीं, दो लाभ*
- एक तो करेला आप तीता दूजे नीम चढ़ा—
  बुरे का और बुरे से संग होना
- एक अनार सौ बीमार— *एक वस्तु को सभी चाहनेवाले*
- एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी— *दोष करके न मानना*
- एक म्यान में दो तलवार—*एक स्थान पर दो उग्र विचार वाले*
- ओछे की प्रीत बालू की भीत— *नीचों का प्रेम क्षणिक*
- ओस चाटने से प्यास नहीं बूझती—
  अधिक कंजूसी से काम नहीं चलता
- कबीरदास की उलटी बानी, बरसे कंबल भींगे पानी—
  प्रकृतिविरुद्ध कार्य
- कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा (गंगू) तेली—
  छोटे का बड़े के साथ मिलान करना
- कहे खेत की, सुने खलिहान की—
  हुक्म कुछ और करना कुछ और
- कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा—
  इधर-उधर से सामान जुटाकर काम करना
- काला अक्षर भैंस बराबर— *निरा अनपढ़*

➤ काबुल में क्या गदहे नहीं होते— *अच्छे-बुरे सभी जगह हैं*

➤ का वर्षा जब कृषि सुखाने—
मौका बीत जाने पर कार्य करना व्यर्थ है

➤ काठ की हाँड़ी दूसरी बार नहीं चढ़ती—
कपट का फल अच्छा नहीं होता

➤ किसी का घर जले, कोई तापे—
दूसरे का दुःख में देखकर अपने को सुखी मानना

➤ खरी मजूरी चोखा काम—
अच्छे मुआवजे में ही अच्छा फल प्राप्त होना

➤ खोदा पहाड़ निकली चुहिया— *कठिन परिश्रम, थोड़ा लाभ*

➤ खेत खाये गदहा, मार खाये जोलहा—
अपराध करे कोई, दण्ड मिले किसी और को

➤ गाँव का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध—
बाहर के व्यक्तियों का सम्मान, पर अपने यहाँ के व्यक्तियों की कद्र नहीं

➤ गुड़ खाय गुलगुले से परहेज— *बनावटी परहेज*

➤ गोद में छोरा नगर में ढिंढोरा—
पास की वस्तु का दूर जाकर ढूँढ़ना

➤ गाछे कटहल, ओठे तेल—
काम होने के पहले ही फल पाने की इच्छा

➤ गरजे सो बरसे नहीं— *बकवादी कुछ नहीं करता*

➤ गुरु गुड़, चेला चीनी—
गुरु से शिष्य का ज्यादा काबिल हो जाना

➤ घड़ी में घर जले, नौ घड़ी भद्रा—
हानि के समय सुअवसर-कुअवसर पर ध्यान न देना

➤ घर पर फूस नहीं, नाम धनपत—
गुण कुछ नहीं, पर गुणी कहलाना

➤ घर का भेदी लंका ढाए— *आपस की फूट से हानि होती है*

➤ घर की मुर्गी दाल बराबर—
घर की वस्तु का कोई आदर नहीं करना

➤ घर में दिया जलाकर मसजिद में जलाना—
दूसरे को सुधारने के पहले अपने को सुधारना

➤ घी का लड्डू टेढ़ा भला—
लाभदायक वस्तु किसी तरह की क्यों न हो

➤ चोर की दाढ़ी में तिनका—
जो दोषी होता है वह खुद डरता रहता है

➤ चूहे घर में दण्ड पेलते हैं— *अभाव-ही-अभाव*

➤ चमड़ी जाय, पर दमड़ी न जाय— *महा कंजूस*

➤ ठठेरे-ठठेरे बदलीअल— *चालाक को चालक से काम पड़ना*

➤ ताड़ से गिरा तो खजूर पर अटका—
एक खतरे में से निकलकर दूसरे खतरे में पड़ना

➤ तीन कनौजिया, तेरह चूल्हा— *जितने आदमी उतने विचार*

➤ तेली का तेल जले और मशालची का सिर दुखे (छाती फाटे)—*खर्च किसी का हो और बुरा किसी और को मालूम हो*

➤ तन पर नहीं लत्ता पान खाय अलबत्ता— *शेखी बघारना*

➤ तीन लोक से मथुरा न्यारी— *निराला ढंग*

➤ तुम डाल-डाल तो हम पात-पात—
किसी की चाल को खूब समझते हुए चलना

➤ थूक कर चाटना ठीक नहीं—
देकर लेना ठीक नहीं, वचन-भंग करना, अनुचित

➤ दमड़ी की हाँड़ी गयी, कुत्ते की जात पहचानी गयी—
मामूली वस्तु में दूसरे की पहचान

➤ दमड़ी की बुलबुल, नौ टका दलाली—
काम साधारण, खर्च अधिक

➤ दाल-भात में मूसलचन्द— *बेकार दखल देना*

➤ दुधारु गाय की दो लात भी भली—
जिससे लाभ होता हो, उसकी बातें भी सह लेनी चाहिए

➤ दूध का जला मट्ठा भी फूँक-फूँक कर पीता है—
एक बार धोखा खा जाने पर सावधान हो जाना

➤ दूर का ढोल सुहावना— *दूर से कोई चीज अच्छी लगती है*

➤ देशी मुर्गी, विलायती बोल— *बेमेल काम करना*

➤ धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का—
निकम्मा, व्यर्थ इधर-उधर डोलनेवाला

➤ नक्कारखाने में तूती की आवाज— *सुनवाई न होना*

➤ न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी—
न बड़ा प्रबंध होगा न काम होगा

➤ रोजा बख्शाने गये, नमाज गल पड़ी— *लाभ के बदले हानि*

➤ न देने के नौ बहाने— *न देने के बहुत-से बहाने*

➤ न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी—
झगड़े के कारण को नष्ट करना

➤ नदी में रहकर मगर से वैर—
जिसके अधिकार में रहना, उसी से वैर करना

➤ नाच न जाने आँगन टेढ़ा—
खुद तो ज्ञान नहीं रखना और सामग्री या दूसरों को दोष देना

➤ नौ की लकड़ी, नब्बे खर्च— *काम साधारण, खर्च अधिक*

➤ नौ नगद, न तेरह उधार—
अधिक उधार की अपेक्षा थोड़ा लाभ अच्छा

➤ नीम हकीम खतरे जान— *अयोग्य से हानि*

➤ नाम बड़े, पर दर्शन थोड़े— *गुण से अधिक बड़ाई*

➤ पढ़े फारसी बेचे तेल देखो यह किस्मत (या कुदरत) का खेल— *भाग्यहीन होना*

➤ पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं— *पराधीनता में सुख नहीं*

➤ पहले भीतर तब देवता-पितर— *पेट-पूजा सबसे प्रधान*

➤ पूछी न आछी, मैं दुलहिन की चाची—
जबरदस्ती किसी के सर पड़ना

➤ पराये धन पर लक्ष्मीनारायण—
दूसरे का धन पाकर अधिकार जमाना

➤ पानी पीकर जात पूछना—
कोई काम कर चुकने के बाद उसके औचित्य पर विचार करना

➤ पंच परमेश्वर— *पाँच पंचों की राय*

➤ नाचे कूदे तोड़े तान, ताको दुनिया राखे मान—
आडम्बर दिखानेवाला मान पाता है

➤ बूड़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल—
श्रेष्ठ वंश में बुरे का पैदा होना

➤ बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद—
मूर्ख गुण की कद्र करना नहीं जानता

- बाँझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा— जिसको दुःख नहीं हुआ है वह दूसरे के दुःख को समझ नहीं सकता
- बिल्ली के भाग्य से छींका (सिकहर) टूटा— संयोग अच्छा लग गय
- बोये पेड़ बबूल के आम कहाँ से होय— जैसी करनी, वैसी भरनी
- बैल का बैल गया नौ हाथ का पगहा भी गया— बहुत बड़ा घाटा
- बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी— भय की जगह पर कब तक रक्षा होगी
- बेकार से बेगार भली— चुपचाप बैठे रहने की अपेक्षा कुछ काम करना
- बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्लाह— बड़ा तो जैसा है, छोटा उससे बढ़कर है
- भइ गति साँप-छछूँदर केरी— दुविधा में पड़ना
- भैंस के आगे बीन बजावे, भैंस रही पगुराय— मूर्ख को गुण सिखाना व्यर्थ है
- भागते भूत की लँगोटी ही सही— जाते हुए माल में से जो मिल जाय वही बहुत है
- मियाँ की दौड़ मस्जिद तक— किसी के कार्यक्षेत्र या विचार शक्ति का सीमित होना
- मन चंगा तो कठौती में गंगा— हृदय पवित्र तो सब कुछ ठीक
- मुँह में राम, बगल में छुरी— कपटी
- मान न मान मैं तेरा मेहमान— जबरदस्ती किसी के गले पड़ना
- मेढ़क को भी जुकाम— ओछे का इतराना
- मार-मार कर हकीम बनाना— जबरदस्ती आगे बढ़ाना
- माले मुफ्त दिले बेरहम— मुफ्त मिले पैसे को खर्च करने में ममता न होना
- मियाँ बीवी राजी तो क्या करेगा काजी— जब दो व्यक्ति परस्पर किसी बात पर राजी हों तो दूसरे को इसमें क्या
- मोहरों की लूट, कोयले पर छाप— मूल्यवान वस्तुओं को छोड़कर तुच्छ वस्तुओं पर ध्यान देना
- मानो तो देव, नहीं तो पत्थर— विश्वास ही फलदायक
- मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते— मुफ्त मिली चीज पर तर्क व्यर्थ
- रस्सी जल गयी पर ऐंठन न गयी— बुरी हालत में पड़कर भी अभिमान न त्यागना
- रोग का घर खाँसी, झगड़े घर हाँसी— अधिक मजाक बुरा
- लश्कर में ऊँट बदनाम— दोष किसी का, बदनामी किसी की
- लूट में चरखा नफा— मुफ्त में जो हाथ लगे, वही अच्छा
- लेना-देना साढ़े बाईस— सिर्फ मोल-तोल करना
- सब धान बाईस पसेरी— अच्छे बुरे सबको एक समझना
- सत्तर चूहे खाके बिल्ली चली हज को— जन्म भर बुरा करके अन्त में धर्मात्मा बनना
- साँप मरे पर लाठी न टूटे— अपना काम हो जाय पर कोई हानि भी न हो
- सीधी उँगली से घी नहीं निकलता— सिधाई से काम नहीं होता
- सारी रामायण सुन गये, सीता किसकी जोय (जोरू)— सारी बात सुन जाने पर साधारण सी बात का भी ज्ञान न होना
- हाथ कंगन को आरसी क्या— प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण क्या
- हाथी चले बाजार, कुत्ता भूँके हजार— उचित कार्य करने में दूसरों की निन्दा की परवाह नहीं करनी चाहिए
- हाथी के दाँत दिखाने के और, खाने के और— बोलना कुछ, करना कुछ
- हँसुए के ब्याह में खुरपे का गीत— बेमौका
- हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दीवान— नीच का सम्मान

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जैसी करनी, वैसी भरनी का अर्थ है—
   (a) कार्य के अनुसार परिणाम मिलता है
   (b) जो जितना उधार लेता है, उसे उतना ही लौटाना पड़ता है
   (c) बुरे काम का बुरा परिणाम होता है
   (d) अच्छा फल चाहने वाले को बुरा काम छोड़ देना चाहिए
2. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए का अर्थ है—
   (a) पैसा ही माँ-बाप होना (b) अत्यधिक कंजूस होना
   (c) मक्खीचूस होना (d) मर जाए पर पैसा न जाए
3. अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत का अर्थ है—
   (a) समय रहते काम करना चाहिए
   (b) समय पर काम न करने से बाद में पछताना पड़ता है
   (c) नष्ट फसल की रखवाली बेकार है
   (d) अपने सामान की रक्षा पहले ही करनी चाहिए
4. छछून्दर के सिर में चमेली का तेल का अर्थ है—
   (a) दान के लिए सुपात्र न होना
   (b) गंजे व्यक्ति के सिर पर सुगन्धित तेल लगाना
   (c) बिल्कुल अनपढ़ व्यक्ति को धन मिलना
   (d) अयोग्य व्यक्ति को अच्छा पद मिलना
5. माँगे भीख पूछे गाँव की जमा का अर्थ है—
   (a) अपनी असलियत भूलकर बात करना
   (b) भीख माँगकर गुजारा करना
   (c) ग्राम समाज की भलाई करना
   (d) इनमें से कोई नहीं (रेलवे, 1997)
6. कोई इर घाट तो कोई बीर घाट का अर्थ है—
   (a) बार-बार कथन बदलना (b) ताल-मेल न होना
   (c) तितर-बितर होना (d) बहुत चालाक होना (रेलवे, 1998)
7. अपनी डफली अपना राग का अर्थ है—
   (a) स्वतंत्र होना (b) अपना दुखड़ा रोना
   (c) संगठन का अभाव
   (d) सबका अपने-अपने मन के अनुसार चलना (रेलवे, 1998)
8. हँसुए के ब्याह में खुरपी का गीत का अर्थ है—
   (a) शादी का गीत गाना (b) जश्न मनाना
   (c) असंगत बातें करना (d) निचले स्तर का कार्य करना (रेलवे, 1998)

9. जाके पाँव न फटे बिवाई सो क्या जाने पीर पराई का का अर्थ है—
(a) दयालु होना (b) कठोर होना
(c) दूसरे के कष्ट को अनुभव करना
(d) जिसके ऊपर बीतती है वही जानता है *(रेलवे, 1998)*

10. जस दूल्हा तस बनी बराता का अर्थ है—
(a) संगठन से ही कार्य सिद्ध होता है
(b) सुन्दर वस्तु के साथ ही सुन्दर वस्तु का मेल होना
(c) सभी साथी एक ही जैसे
(d) बेढंगा होना *(रेलवे, 1998)*

11. आडम्बर बहुत, किन्तु वास्तविकता कुछ नहीं के लिए सही लोकोक्ति है—
(a) आँख का अंधा नाम नयनसुख
(b) ऊँची दुकान फीका पकवान
(c) ऊँट के मुँह में जीरा
(d) खोदा पहाड़ निकली चुहिया *(बी० एड०, 1998)*

12. चोर-चोर·····भाई
(a) सगे (b) चचेरे (c) मौसेरे (d) ममेरे *(बी० एड०, 1998)*

13. ऊँट के मुँह में ·····
(a) जीरा (b) केला (c) बन्दर (d) मिर्च *(रेलवे, 1998)*

14. ·····के अंधे को हरा ही हरा नजर आता है।
(a) बचपन (b) सावन (c) बात (d) आँख *(रेलवे, 1998)*

15. कर·····तो हो भला
(a) सेवा (b) भला (c) बला (d) बुरा *(रेलवे, 1998)*

16. अंधों में·····राजा
(a) लंगड़ा (b) लूला (c) काना (d) पहलवान *(रेलवे, 1998)*

17. घर का भेदी ·····ढाए
(a) बाबरी (b) अयोध्या (c) लंका (d) कहर *(रेलवे, 1998)*

18. नाच न जाने·····टेढ़ा
(a) कमरा (b) गाना (c) कमर (d) आँगन *(रेलवे, 1998)*

19. जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि का अर्थ है—
(a) कवि के लिए कहीं भी अगम्य नहीं
(b) कवि निरकुंश होता है
(c) कवि कल्पनाशील होता है
(d) कवि भावप्रवण होता है *(एस० एस० सी०, 1999)*

20. पुचकारा कुत्ता सिर चढ़े का अर्थ है—
(a) पुचकारने पर कुत्ता भी प्यार दिखाता है
(b) ओछे लोग मुँह लगाने पर अनुचित लाभ उठाते हैं
(c) ओछे लोग ही इस जमाने में तरक्की कर सकते हैं
(d) नगण्य व्यक्ति को कभी अपमानित नहीं करना चाहिए *(एस० एस० सी०, 1999)*

21. तीन दिन मेहमान चौथे दिन हैवान का अर्थ है—
(a) आतिथ्य थोड़े दिन का ही अच्छा होता है
(b) अतिथि का कभी अनादर नहीं करना चाहिए
(c) मेहमान भी कभी-कभी शैतान बन जाता है
(d) ससुराल में दामाद को अधिक दिन नहीं रहना चाहिए *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

22. अधजल गगरी·····जाय
(a) फैलत (b) लुढ़कत (c) उछलत (d) छलकत *(रेलवे, 1999)*

23. ·····धतूरें सो कहत गहनो गढ़ो न जात
(a) रजत (b) कनक (c) स्वर्ण (d) कंचन *(रेलवे, 1999)*

24. तबेली की बला बन्दर के सिर का अर्थ है—
(a) किसी की शिकायत दूसरों से करना
(b) एक-दूसरे से लड़वाना
(c) किसी का अपराध दूसरे के सिर
(d) अपना दोष दूसरों के सिर मढ़ना *(रेलवे, 2000)*

25. एक और एक ग्यारह होते हैं का अर्थ है—
(a) संसार में सब संभव है (b) भीड़ में बल है
(c) गणित विद्या में निपुणता प्राप्त करना
(d) संगठन में शक्ति है *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

26. कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है का अर्थ है—
(a) अपनी ही प्रशंसा करना
(b) अपनी बनाई हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है
(c) किसी को बोलने नहीं देना
(d) दूसरों की वस्तु को तुच्छ समझना *(रेलवे, 2000)*

27. काला अक्षर भैंस बराबर का अर्थ है—
(a) छिद्रान्वेषी होना (b) समदर्शी होना
(c) अनपढ़ होना (d) अदूरदर्शी होना *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

28. गए थे रोजा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी का अर्थ है—
(a) मुश्किल में पड़ जाना (b) कष्ट पहुँचना
(c) गरीब हो जाना
(d) उपकार करने के बदले स्वयं को दुःख भोगना पड़ा *(रेलवे, 2000)*

29. गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास का अर्थ है—
(a) अपने-अपने घर जाना (b) अपना-अपना काम करना
(c) किसी की नहीं सुनना
(d) जिसका कोई दृढ़ सिद्धान्त नहीं होता *(रेलवे, 2000)*

30. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली का अर्थ है—
(a) ऊटपटांग बात करना
(b) राजा और सामान्य व्यक्ति की तुलना
(c) राजा भोज और गंगू तेली के बीच तुलना करने का प्रयास
(d) आकाश-पाताल का अन्तर होना *(रेलवे, 2000)*

31. काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती का अर्थ है—
(a) बुरे दिन हमेशा नहीं रहते
(b) लकड़ी का बर्तन अग्नि से जल सकता है
(c) छल-कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता
(d) दुर्भाग्य की मार बार-बार नहीं होती *(उ० प्र० निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)*

32. टूट चाप नहिं जुरै रिसाने का अर्थ है—
(a) टूटा धनुष क्रोध करने से नहीं जुड़ता
(b) चिन्ता छोड़ो सुख से जिओ
(c) नुकसान के लिए परेशान नहीं होना चाहिए
(d) नुकसान हो जाने पर क्रोध करना व्यर्थ है *(रेलवे, 2001)*

33. आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास का अर्थ है—
(a) हरि भक्ति का मार्ग कठिन होता है
(b) उद्देश्य की प्राप्ति में असफल होना
(c) किसी कार्य विशेष की उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना
(d) ईश्वर भक्ति को छोड़कर व्यापार में लग जाना

34. अंधा पावै आँखें तो पतियाय का अर्थ है—
(a) सबसे मूल्यवान वस्तु प्राप्त करके प्रसन्न होना
(b) अभीष्ट की प्राप्ति होने पर विश्वास का जमना
(c) असंभव की चाह होना
(d) असंभव को संभव कर दिखाना *(रेलवे, 2001)*

35. उधो का लेना न माधो को देना का अर्थ है—
(a) अपने काम से काम (b) भक्ति भाव से दूर रहना
(c) हिसाब साफ रखना (d) सबसे अलग रहना
(उ० प्र० निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

36. उपाय वही सफल और श्रेष्ठ है जिसका लोहा विरोधी को भी मानना पड़े के लिए सही लोकोक्ति है—
(a) आधा तीतर आधा बटेर
(b) चमत्कार को नमस्कार
(c) जादू वही जो सिर चढ़कर बोले
(d) इनमें से कोई नहीं *(रेलवे, 2001)*

37. यह प्रेम का पंथ कराल महा के लिए सही लोकोक्ति है—
(a) अरु नेह सों नातो बड़ावतो है
(b) तरवार की धार पै धावनो है
(c) दुखदाई औ घोर सतावनी है
(d) मन ही मन में उर भावनी है *(रेलवे, 2001)*

38. राम नाम जपना, पराया माल अपना का अर्थ है—
(a) दान करना
(b) सर्वज्ञ होना
(c) धोखे से धन जमा करना
(d) दूसरों से सहानुभूति रखना *(बैंक परीक्षा, 2002)*

39. फिसल पड़े तो हर गंगे का अर्थ है—
(a) मजबूरी में काम पड़ना
(b) नुकसान उठाना
(c) एक साथ दो काम करना
(d) विपत्ति पड़ने पर ईश्वर का स्मरण करना
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

40. नीम हकीम खतरे जान का अर्थ है—
(a) डींग हाँकना
(b) बीमारी का गलत इलाज होना
(c) खतरनाक चीजें
(d) अल्प विद्या भयंकर *(बैंक परीक्षा, 2002)*

41. सौ सयाने एक मत का अर्थ है—
(a) कुछ भी निश्चय न कर पाना
(b) ज्यादा चालाक बनना
(c) अच्छे विचारों में भिन्नता होना
(d) बुद्धिमानों के विचार एक-से होते हैं *(बैंक परीक्षा, 2002)*

42. नन पर नहीं लत्ता पान खाए अलबत्ता का अर्थ है—
(a) बहुत गरीब होना (b) झूठा दिखावा करना
(c) एक साथ दो लाभ होना (d) बुरी आदत का शिकार
(बैंक परीक्षा, 2002, रेलवे, 2010)

43. गुरु गुड़ चेला चीनी का अर्थ है—
(a) गुरु हमेशा सर्वोपरि होता है
(b) गुरु से चेले का आगे बढ़ जाना
(c) चेले द्वारा महान कार्य करना
(d) गुरु के कथनानुसार कार्य करना *(बैंक परीक्षा, 2002)*

44. चोर की दाढ़ी में तिनका का अर्थ है—
(a) चोर आडम्बर दिखाता है
(b) चोर साधारण जन से अधिक दान करता है
(c) अपराधी सदा शंका से घिरा रहता है
(d) इनमें से कोई नहीं *(बैंक परीक्षा, 2002)*

45. आँख का अंधा नाम नयनसुख का अर्थ है—
(a) एक ही व्यक्ति में कई अवगुण होना
(b) केवल नाम अच्छा होने से ही कोई व्यक्ति अच्छा नहीं होता
(c) गुण के विपरीत नाम
(d) आँख न होने पर भी सुखी *(बैंक परीक्षा, 2002)*

46. पर उपदेश कुशल बहुतेरे का अर्थ है—
(a) बिन मांगे सलाह देना
(b) दूसरों को उपदेश देने को आसान समझना
(c) बिना सोचे दूसरों की सलाह पर काम करना
(d) दूसरों की बात को शीघ्र मान लेना *(बैंक परीक्षा, 2002)*

47. निम्नलिखित में एक लोकोक्ति है, उसका चयन कीजिए—
(a) कठपुतली होना (b) आँख चुराना
(c) आस्तीन का साँप (d) एक पंथ दो काज
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

48. आम के आम गुठलियों के दाम का अर्थ है—
(a) मनमानी करना (b) नकली वस्तु देना
(c) दोहरा लाभ होना (d) बहुत चतुर व्यापारी बनना
(पी० सी० एस०, 2003)

49. आ बैल मुझे मार का अर्थ है—
(a) छेड़छाड़ करना
(b) जान बूझकर मुसीबत में पड़ना
(c) बलशाली के सामने वीरता दिखाना
(d) कायर होते हुए भी वीरता का प्रदर्शन करना
(पी० सी० एस०, 2003)

50. हाथ कंगन को आरसी क्या का अर्थ है—
(a) बिल्कुल पढ़ा-लिखा न होना
(b) विद्वान को धन की आवश्यकता नहीं
(c) सुन्दर महिला को जेवर की जरूरत नहीं
(d) प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं *(पी० सी० एस०, 2003)*

51. आप डूबे तो जग डूबा का अर्थ है—
(a) बुरा आदमी सबको बुरा कहता है
(b) मरने के बाद कौन देखने आता है कि क्या हुआ
(c) अपनी हानि होने पर दूसरों को भी हानि पहुँचाना
(d) सबको अपने समान समझना *(पी० सी० एस०, 2003)*

52. तेल देखो तेल की धार देखो का अर्थ है—
(a) लापरवाही से नुकसान होता है
(b) तेल की धार देखकर तेल का परीक्षण करना
(c) काम करते समय उसकी पहचान करना
(d) रूख पहचानना *(पी० सी० एस०, 2003)*

53. अधजल गगरी छलकत जाए का अर्थ है—
(a) अल्पज्ञ द्वारा गर्व प्रदर्शन (b) अत्यधिक बोलना
(c) संभल कर न चलना
(d) अपनी छोटी-सी बात की प्रशंसा करना
(पी० सी० एस०, 2003, सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

54. अंधे के हाथ बटेर लगना का अर्थ है—
(a) अंधा भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है
(b) अंधेरे में कोई चीज मिल जाना
(c) अपात्र को सफलता मिल जाना
(d) शेयरों में भारी लाभ होना *(पी० सी० एस०, 2003)*

55. घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध का अर्थ है—
(a) घर के ज्ञानी को सम्मान नहीं
(b) घर-घर में मिट्टी के चूल्हे
(c) घर की मुर्गी दाल बराबर (d) घर का भेदी लंका ढाहे
(रेलवे, 2003)

56. कोयले की दलाली में मुँह काला का अर्थ है—
(a) कोयले का व्यापार करना (b) बुरे काम से बुराई मिलना
(c) झूठ बोलना (d) व्यापार में घाटा होना *(रेलवे, 2003)*

57. हथेली पर सरसों नहीं जमती का अर्थ है—
(a) सरसों के लिए जमीन चाहिए, हथेली नहीं
(b) हर काम में मनमानी नहीं चल सकती
(c) काम के लिए समय चाहिए, जब चाहो तभी काम नहीं हो सकता
(d) सफलता समय पर आती है *(रेलवे, 2004, 2010)*

58. आगे नाथ न पीछे पगहा का अर्थ है—
(a) पूर्ण स्वतंत्र (b) अपने मन की कहना
(c) बंधन रहित होना (d) इधर-उधर भागना *(बी० एड०, 2005)*

59. तीन लोक से मथुरा न्यारी का अर्थ है—
(a) बहुत सुन्दर होना (b) दूर की वस्तु सुन्दर लगना
(c) जरूरत से ज्यादा बड़ाई करना
(d) कृष्ण भक्त होना *(बी० एड०, 2005)*

60. खग जाने खग ही की भाषा का अर्थ है—
(a) पक्षियों की भाषा जानना
(b) समान प्रवृत्ति वाले ही एक दूसरे को सराहते हैं
(c) पक्षी अपनी भाषा स्वयं समझते हैं
(d) पक्षियों की तरह बोलना *(बी० एड०, 2005)*

61. ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर का अर्थ है—
(a) मूर्ख के साथ मित्रता करने पर हानि ही होती है
(b) मुसीबतों से घबराना किसी भी प्रकार से उचित नहीं
(c) ओछे व्यक्ति किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकते
(d) कठिन काम शुरू करने पर कष्ट तो सहन करने ही पड़ते हैं *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

62. जैसी बहे बयार, पीठ तब तैसी दीजे का अर्थ है—
(a) समय का रुख देखकर काम करना चाहिए
(b) राजनीति में दल-बदल करते रहना चाहिए
(c) ऐसा काम करना चाहिए जिससे संकट में न फँसा जाए
(d) पवन की तरह कभी शीतल और कभी उष्ण होना चाहिए

63. तू डाल-डाल मैं पात-पात का अर्थ है—
(a) दोनों विद्वान (b) दोनों तत्त्वज्ञ
(c) दोनों मूर्ख (d) दोनों चालाक

64. बिल्ली को पहले ही दिन मारना चाहिए का अर्थ है—
(a) भय का शमन शुरू में ही कर देना चाहिए
(b) दुश्मन पर पहले ही वार कर देना चाहिए
(c) रौब पहले ही दिन पड़ता है, फिर नहीं
(d) बुरा समय आते ही सचेत हो जाना चाहिए

65. सिर सहलाए भेजा खाए का अर्थ है—
(a) एकदम निकट आकर शोरगुल करना
(b) किसी के सिर पर सवार हो जाना
(c) दोस्त बनकर हानि पहुँचाना
(d) चापलूसों के कहने को करना

66. एक अनार सौ बीमार का अर्थ है—
(a) एक वैद्य अनेक बीमार
(b) किसी वस्तु की पूर्ति कम किन्तु माँग अधिक
(c) महामारी के दिनों में दवाओं की कमी
(d) किसी वस्तु की आपूर्ति समाप्त हो जाना

67. 'नौ दिन चले अढाई कोस' का अर्थ है—
(a) बहुत धीमी गति से काम करना
(b) बहुत धीमी गति से चलना
(c) अधिक समय में कम काम करना
(d) हरामखोरी करना *(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 2007)*

68. 'एक तो करेला आप तीता दूजा नीम चढ़ा' का अर्थ है—
(a) बुरे का और बुरे से संग होना
(b) एक बुरा तो दूसरा उससे भी बुरा
(c) बुरे व्यक्ति की बुरी संतान
(d) बुरे का अच्छे से संग होना *(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)*

69. 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया' लोकोक्ति का अर्थ है—
(a) कम परिश्रम करके बहुत मिलना
(b) परिश्रम अधिक और फल कम
(c) परिश्रम के बिना ही फल पा जाना
(d) श्रम करने पर कुछ न मिलना *(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)*

70. निम्नलिखित कहावत का सही अर्थ बताइए—
चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाते
(a) कंजूसी करना
(b) सीमित साधनों से काम चलाना
(c) छोटे होकर बड़ा काम करना
(d) सीमित साधनों से बड़े काम नहीं होते *(आर.आर.बी. इलाहाबाद एकाउन्टेन्ट असिस्टेंट, 2010)*

71. 'खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है'—लोकोक्ति का अर्थ है-
(a) संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है
(b) प्रयत्न ज्यादा पर लाभ थोड़ा
(c) कपटपूर्ण व्यवहार
(d) किए का फल भोगना पड़ेगा *(उत्तराखण्ड पी. सी. एस, 2012)*

उत्तरमाला

1. (a)	2. (b)	3. (b)	4. (d)	5. (a)	6. (b)	7. (d)	8. (c)	9. (d)	10. (c)	11. (b)	12. (c)	
13. (a)	14. (b)	15. (b)	16. (c)	17. (c)	18. (d)	19. (a)	20. (b)	21. (a)	22. (d)	23. (b)	24. (c)	
25. (d)	26. (b)	27. (c)	28. (d)	29. (d)	30. (d)	31. (c)	32. (d)	33. (c)	34. (b)	35. (a)	36. (c)	
37. (b)	38. (c)	39. (a)	40. (d)	41. (d)	42. (b)	43. (b)	44. (c)	45. (c)	46. (b)	47. (d)	48. (c)	
49. (b)	50. (d)	51. (a)	52. (d)	53. (a)	54. (c)	55. (a)	56. (b)	57. (c)	58. (c)	59. (c)	60. (b)	
61. (d)	62. (a)	63. (d)	64. (a)	65. (c)	66. (b)	67. (a)	68. (a)	69. (b)	70. (d)	71. (a)		

★★★